Dr. Madan Paswan, History
Class:- B.A. Part-I (Hons.P-I+Sub.)
Topic: Unit-IV (i) Rise & Growth of Gupta Empire - Samudragupta.

Lecture No. 19.
Date - 23.07.2020
From Page No. 1 to 2.
Continue

डॉ० आर० सी० मजूमदार का कहना है कि समुद्रगुप्त के साम्राज्य में कश्मीर, पश्चिमी पंजाब, पश्चिमी राजपूताना, सिंध और गुजरात के अतिरिक्त शेष भारत सम्मिलित था और फतीसगढ़, उड़ीसा प्रदेश तथा पूर्वी तट के साथ-साथ दक्षिण में चिंगलपुर तक या उससे भी आगे तक के प्रदेश साम्राज्य में सम्मिलित थे। इस प्रकार यह साम्राज्य छह शताब्दियों पूर्व के अशोक के साम्राज्य के पश्चात् भारत में सबसे बड़ा था और यह स्वाभाविक था कि विदेशी राज्य भी उस साम्राज्य के स्वामी का सम्मान करें। एक परवर्ती चीनी स्रोत के प्रमाण से मिलता है कि श्रीलंका के राजा 'मेघवर्मन' ने कुछ उपहार भेजकर समुद्रगुप्त से गया में एक बुद्ध मन्दिर बनवाने की अनुमति मांगी थी। समुद्रगुप्त के पास एक शक्तिशाली नौ सेना भी थी, जिससे वह विदेशों से संबंध सुदृढ़ कर सका। ललित कलाओं तथा काल में निपुणता के कारण उसे 'कविराज' भी कहा जाता है।

समुद्रगुप्त द्वारा लड़े गये युद्ध :-

(1.) आर्यावर्त के प्रथम युद्ध में समुद्रगुप्त ने अच्युत, नागसेन और गणपति नाग का उन्मूलन किया।

(2.) समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ के 12 राजाओं को पराजित किया। इनको 'धर्म विजय' कहा गया। ये शासक कौशल (दक्षिण कौशल) का राजा महेन्द्र, महाकान्तार का राजा व्याघ्र राज, कौशल का राजा मण्टराज, पिष्टपुर का राजा महेन्द्रगिरि, कोट्टूर का राजा स्वामिदत्त, एरंड पल्ल का राजा दमन, कांची का राजा विष्णु गोपन, अवमुक्त का राजा नीलराज, वेंगी का राजा नीलराज तथा हस्तिवर्मन, पलक्क का राजा उग्रसेन, देवराष्ट्र का राजा कुबेर और कुस्थलपुर का राजा धनंजय थे।

(3.) आर्यावर्त के द्वितीय युद्ध में उसने उत्तरी भारत के राजाओं का विनाश कर उन्हें अपने राज्य में मिला लिया। आर्यावर्त में 9 राज्य थे। इस नीति के प्रशस्ति में 'प्रसभोद्धरण' कहा गया है। जो — (क) रुद्रदेव कौशाम्बी का राजा था, (ख) मत्तिल बुलन्दशहर का राजा था, (ग) नागदत्त के राज्य की पहचान संदिग्ध है, (घ) चन्द्रवर्मा बांकुड़ा जिले का शासक था, (ङ) गणपतिनाग मथुरा, (च) नागसेन पद्मावती में शासन करते थे, (छ) अच्युत बरेली का राजा था, (ज) नन्दी और (झ) बलवर्मा के राज्यों की पहचान संदिग्ध है।

(4.) समुद्रगुप्त ने सभी आटविक राज्यों को अपना सेवक बना लिया। उत्तर प्रदेश के गाजीपुर से लेकर मध्य प्रदेश के जबलपुर तक ये राज्य फैले थे।

(5.) उत्तरी तथा उत्तरी-पूर्वी सीमा पर, उसने पाँच राज्यों को जीता — (क) समतट, (ख) डवाक (ग) कर्तृपुर (घ) कामरूप, और (ङ) नेपाल।

(6.) प्रत्यन्त राज्यों की दूसरी कोटि में नौ गणराज्य थे, जो पंजाब, मालवा, राजस्थान

(Conti...)

तथा मध्य प्रदेश के विभिन्न भागों में फैले हुए थे – (क) मालव, (ख) अर्जुनायन, (ग) यौधेय, (घ) भद्रक, (ङ) आभीर, (च) सार्जुन, (छ) सनकानीक, (ज) काक और (झ) खरपरिक।

गुप्त काल को प्राचीन भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है। यह आर्थिक दृष्टि से सच नहीं हो सकता, क्योंकि इस काल में उत्तर भारत के कई शहरों का पतन हुआ। हालाँकि, स्रोत चाहे जो भी हो, गुप्तों के पास सोना बहुत था; उन्होंने सोने के सर्वाधिक सिक्के जारी किये। राजा एवं धनी व्यक्ति अपनी आय का एक हिस्सा कला और साहित्य में रत लोगों की आजीविका में खर्च करते थे। समुद्रगुप्त इसका संरक्षक था। समुद्रगुप्त अपने सिक्कों में वीणा बजा रहे हैं।